प्रसार पुस्तिका – 08/2026

मूँग की वैज्ञानिक खेती

आलेख

डॉ. मुनेश्वर प्रसाद
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

ई. जीतेन्द्र कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियंत्रण)

सुश्री वर्षा कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान)

कृषि विज्ञान केन्द्र, गंधार, जहानाबाद
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

भाकृअनुप
ICAR

मूँग की वैज्ञानिक खेती

विश्व में सबसे ज्यादा मूँग की खेती भारत देश में होती है। बिहार में अगर मूँग की खेती को देखे तो 80 प्रतिशत से भी ज्यादा मूँग की खेती सिर्फ गरमा मौसम मे ही होती है। मूँग अपने वृद्धिकाल में सबसे ज्यादा गर्मी सहन कर सकता है तथा गेहूं, मक्का, राई–सरसों, मटर, चना, आलू आदि फसलों के बाद भली–भांति पैदा किया जा सकता है। वसंतकालीन गन्ना, सूर्यमूखी, आलू के साथ अंतरवर्ती फसल के रूप में भी लगाया जा सकता है। गरमा मूंग की खेती धान–गेहूँ फसल प्रणाली में तीसरे फसल के रूप में लगा सकते है। मूँग का उपयोग दाल के अलावे विभिन्न व्यंजनों के रूप में किया जाता है। यह एक कम समयावधि की दलहनी फसल है, जो उच्च गुणवत्ता के प्रोटीन का एक उत्तम स्रोत माना जाता है। पोषक गुणों के कारण यह पौष्टिक आहार के रूप में जाना जाता है जिससे इसकी माँग और बाजार दोनो बना रहता है । मूँग दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण (35–40 कि. ग्राम प्रति हेक्टेयर) कर के भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी करती है ।

भूमि का चुनाव व तैयारी : हल्की रेतीली दोमट मिट्टी या मध्यम प्रकार की मृदा व जल निकास की समुचित व्यवस्था हो, मूँग की खेती के लिए उपयुक्त है। बुआई से पहले दो–तीन बार हल या कल्टीवेटर चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा कर पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए ।

बीज की मात्रा व उपचार : मूँग के बीज शुद्ध, प्रमाणित व रोग मुक्त होना चाहिए । भंडारित बीज को साफ करके, अंकुरण परीक्षण करने के बाद बोने के लिए उपयोग मे लाना चाहिए । बुआई के लिए उन्नत किस्मों का 15–20 कि. ग्राम प्रति हेक्टयर बीज दर का प्रयोग करना चाहिए । बुआई से पूर्व बीज को मिश्रित फफूंदनाशी, कार्बेन्डाजिम + मैनकोजेब की 2 ग्राम मात्रा प्रति कि॰ग्रा॰ बीज दर से उपचारित कर बोना चाहिए जिससे बीज जनित रोगों से छुटकारा मिल सके।

बुआई का समय : ग्रीष्मकालीन मूँग की बुआई 15 फरवरी से 31 मार्च महीने तक अथवा वर्षाकालीन मूँग 15 जून से जुलाई माह में प्रथम सप्ताह तक कर देना चाहिए।

मूँग के उन्नत प्रभेद

क्र॰ सं॰	प्रभेद	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	उत्पादन (क्विं॰ हे॰)	विशेष गुण
1.	एच॰यू॰एम॰16 (मालवीय जनप्रिया)	60–65	12–14	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी एवं गरमा मौसम के लिए उपयुक्त
2.	एच॰यू॰एम॰12 (मालवीय जनचेतना)	60–65	12–14	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी एवं गरमा मौसम के लिए उपयुक्त
3.	शिखा (आई.पी.एम. 410–3)	60–65	13–15	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी एवं गरमा मौसम के लिए उपयुक्त

क्र॰ सं॰	प्रभेद	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	उत्पादन (क्विं॰ हे॰)	विशेष गुण
4.	पूसा विशाल	70–75	15–18	बड़ा दाना, गरमा मौसम के लिए उपयुक्त
5.	पी. एस. 16	70–75	10–12	गरमा मौसम के लिए उपयुक्त
6.	पूसा वैशाखी	60–70	10–12	चमकदार, बड़ा दाना, गरमा मौसम के लिए उपयुक्त
7.	पी.डी.एम.–139 (सम्राट)	60–65	12–15	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी
8.	एस. एम. एल. 668	65–70	15–20	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी
9.	सुर्या (आई.पी.एम. 512–1)	60–65	14–16	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी
10.	वर्षा (एच 70–16)	60–65	11–12	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी खरीफ मौसम के लिए उपयुक्त
11.	विराट (आई.पी.एम. 205–7)	55–60	12–14	पीला मौजैक वाइरस रोग (YMV) रोधी एवं गरमा मौसम के लिए उपयुक्त

बुआई का विधि : मूँग फसलो के बीज को कतारो में बुआई करें । कतार से कतार की दुरी 30 से॰ मी॰ एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से॰ मी॰ रखें । बीज की बुआई 5–6 से॰ मी॰ गहराई पर करें । पंक्तियों में बुआई करने से बीज कम लगता है तथा अंकुरण एवं बढ़वार अच्छी होती है। बुआई शुन्य जुताई मशीन से करना बेहतर होता है ।

खाद एवं उर्वरक : बेहतर उत्पादन के लिए मृदा जांच की संस्तुति के आधार पर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। फसल की बुआई के समय 2.5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद का प्रयोग करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों में 20 किलोग्राम नत्रजन, 40–50 किलोग्राम स्फूर एवं 30 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। उर्वरक की पूरी मात्रा बुआई से पूर्व अंतिम जुताई के समय समान रूप से खेत में मिला देना चाहिए । अंतिम जुताई के पहले फास्फेट रासायनिक उर्वरकों जैसे डी.ए. पी., सिंगल सुपर फास्फेट की उपयोग क्षमता में वृद्धि के लिए पी.एस.बी. तरल 1 ली॰ या पी.एस.बी. कल्चर 5 कि॰ग्रा॰ को 100 किलोग्राम सड़े गोबर की खाद में प्रति हेक्टेयर की दर मिलाकर जुताई करें एवं इसके बाद पाटा देकर मिट्टी में मिला दें।

खरपतवार नियंत्रण : फसल एवं खरपतवार की प्रतिस्पर्धा 15–30 दिनों तक रहती है। इस बीच निराई करने से खरपतवार नष्ट हो जाते है। इसके साथ ही भूमि में वायु संचार होता है, जिससे पौधों की जड़ की ग्रंथियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमंडल में नाईट्रोजन एकत्र करने में सहायता मिलती है। रासायनिक नियंत्रण के लिए बुआई के बाद तथा बीज अंकुरण के पूर्व पेन्डीमेथलीन 30 प्रतिशत ई.सी. 3.0 लीटर या फ्लूक्लोरेलिन 750 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए। मूँग की खड़ी फसल में चौड़ी पत्ती एवं घास कुल के खरपतवार के नियंत्रण हेतु इमिजाथाइपर 10 एस. एल. 3.30 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के 15–20 दिनों बाद 500–600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए ।

सिंचाई : गरमा मूँग में आवश्यकतानुसार सिंचाई करना चाहिए। ग्रीष्मकालीन मूँग की फसल को 4–5 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। शाखा व फलियाँ बनते समय तथा दाना भरते समय सिंचाई जरूर करना चाहिए।

रोग प्रबंधन

पीत शिरा रोग – विषाणुजनित पीत शिरा रोग (पीला मोजेक) का प्रकोप मूँग की फसल में प्रमुखता से होता है। इससे 50 से 80 प्रतिशत तक उपज की हानि होती है। इस रोग के लक्षण बुआई के 4–5 सप्ताह बाद दिखने लगते है। सर्वप्रथम पत्तीयों पर गोलाकार पीले रंग के धब्बे दाने के आकार के बनते है, जो धीरे–धीरे बढ़कर हरे पीले से चकत्ते के रूप में बदल जोते है तथा धीरे–धीरे पूरी पत्ती पीली पड़कर सूख जाती है। रोग का प्रसार सफेद मक्खी नामक रसचूसक कीट द्वारा होता है। इसके निदान हेतु थायामिथोक्साम 25 डब्ल्यू.जी. 0.4 ग्राम + प्रोपिकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

फली भेदक – फली छेदक कीट मूँग की फसल में अधिक पाया जाता है। देर से बोयी गई फसल में जल्द बोयी गई फसल की तुलना में अधिक हानि होती है। फली और जोड़ वाली जगह पर या फली की सतह पर यह पंतगा अंडे देता है। इसके नियत्रंण के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. का 0.40 मिली. या स्पीनोसेड 45 एस.सी. 0.5 मिली. प्रति लीटर में घोलकर छिड़काव करें।

कटाई – मूँग की फलियाँ एक साथ न फलती है और ना ही साथ–साथ पकती है । मूँग की फलियाँ दो बार तुड़ाई के उपरान्त ही पूरे फसल की कटाई की जाय। गरमा फसल की फलियाँ तोड़ने के उपरान्त बची हुई फसल का उपयोग हरे चारे या हरी खाद के रूप में किया जा सकता है।

उपज एवं भण्डारण – ग्रीष्मकालीन मूँग में उपज 11–12 क्विंटल अथवा वर्षाकालीन मूँग में उपज 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से प्राप्त होती है। बीज को भंडारण करने से पहले अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए । बीज को 8–10 प्रतिशत नमी की अवस्था में भण्डारित करें। सूखी नीम की पत्ती को बीज में मिलाकर भण्डारण करने पर कीड़ों से सुरक्षा की जा सकती है।

प्रकाशक

डा. मुनेश्वर प्रसाद
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

भाकृअनुप ICAR

कृषि विज्ञान केन्द्र, गंधार, जहानाबाद

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर